

SEMESTER – 1

Sr.	Course Type	Course	Credit	Work Hours/Week	Exam Hours	Internal	External	Practical	Total
1	Discipline specific course – Major	DSCM-101 Kumarsambhavam Sarg - 5	4	4	2:30	50	50	--	100
2		DSCM-102 Ratnavali - Harshvardhan	4	4	2:30	50	50	--	100
3	Minor	MI-101 Raguvansham Sarg - 2	4	4	2:30	50	50	--	100
4	Multidisciplinary Course	MD 101 Nitishatakam - Bhartruhari	4	4	2:30	50	50	--	100
5	Ability Enhancement Course (Language)	AEC 101 Malvikagnimitram A Study : KALIDAS	2	2	2:00	25	25	--	50
6	Skill Enhancement Ability Course/ Internship/ Dissertation	SEC 101 YOGA PART—I (Niyatansh)	2	2	1:00	25	15	10	50
7	Common Value Added Course	VAC 101 Environmental Science & Sanskrit	2	2	2:00	25	25	--	50
	Total Credits		23	23		275	265	10	550

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24

B.A.SEMESTER – 1

COURSE – DSCM101

SANSKRIT

CREDIT- 04

KUMARSAMBHAVAM SARG – 5

MARKS : 50+50=100

UNIT 1	महाकाव्यस्य उद्भवः, विकासः, लक्षणानि, कविपरिचयः, जीवनं-कृतय-समयः, कुमारसंभवस्य आधारस्थानानि, महाकाव्य-मूल्यांकनम्
UNIT 2	कुमारसंभव सर्ग - ५ कृति - अभ्यासः श्लोक 1 to 40
UNIT 3	कृति - अभ्यासः श्लोक 41 to 75
UNIT 4	अनुष्टुप्, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, वसंततिलका, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम्, द्रुतविलम्बितम्, उपजाति, मालिनी, पृथिवी,

आधार ग्रंथोः संस्कृत साहित्यनो परिचय- अ.डी. शास्त्री, पार्श्वप्रकाशन, अमदावाद
संस्कृत साहित्यनो इतिहास- सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद
कुमारसंभव प्रा. सुरेश ज. दवे- सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद
कुमारसंभव डॉ. शान्तिकुमार पंडया, पार्श्वप्रकाशन, अमदावाद
प्रशिष्ट संस्कृत छंद - डॉ. मनसुष मोलिया, पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद
संस्कृत छन्द संरचना - डॉ. वसंतकुमार भट्ट, सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद.

प्रश्नपत्रं माण्यं

परीक्षा समय : २:३० क्लक

Exam Time : 2.30 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणभार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1	निबंधात्मक प्रश्न अथवा निबंधात्मक प्रश्न Descriptive question or Descriptive question	१० 10
2	2	(अ)अनुवाद (४मांथी २) (ब)संदर्भ समजूति (५मांथी ३) (A) Translation of Verse (2 out of 4) (B) Reference to the context (3 out of 6)	०४ ०६ 04 06 10
3	2,3	विवेचनात्मक नोट : (४ मांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
4	4	छंद-लक्षण बंधारण सहित समजावो. (४ मांथी २) Explanation of Chhanda with formation Illustration.(2 out of 4)	१० 10
5	1 to 4	टुंका प्रश्नो (८मांथी ५) Short questions (5 out of 8)	१० 10

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
B.A.SEMESTER – 1

COURSE – DSCM102
CREDIT- 04

SANSKRIT
RATNAVALI - HARSHVARDHAN

MARKS : 50+50=100

UNIT 1	कविपरिचयः- जीवनं, समयः, कृतयः, उपरूपक-प्रकाराः, नाटिका- लक्षणानि, रत्नावली- मूल्यांकनम् आधारस्थानानि परिवर्तनं च
UNIT 2	कृति-अध्ययनम्- रत्नावली- १-२
UNIT 3	कृति-अध्ययनम्- रत्नावली- ३-४
UNIT 4	स्वर संधि (मात्र संधि – सूत्रो नही)

संदर्भ ग्रंथोः

रत्नावली, प्रा.सुरेश दवे, सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद
संस्कृत साहित्यनो ष्टित्हास-प्रा. सुरेश जे. दवे, सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद
संस्कृत कवि दर्शन-भोलानाथ व्यास
रत्नावली- लर्षद्वैव माधव, पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद
संस्कृत वाक्य संरचना
सन्धि : संस्कृत भारती

प्रश्नपत्रं माण्युं

परीक्षा समय : २:३० कलाक

Exam Time : 2.30 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणत्वार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1	निबंधात्मक प्रश्न अथवा निबंधात्मक प्रश्न Descriptive question or Descriptive question	१० 10
2	2	(अ) अनुवाद (४मांथी २) (ब) संदर्भ समजूति (५मांथी ३) (A) Translation of Verse (2 out of 4) (B) Reference to the context (3 out of 6)	०४ ०६ 04 06 १० 10
3	2, 3	विवेचनात्मक नोड : (४ मांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
4	4	(अ) संधि करो. (१२ मांथी १०) (ब) संधि छोडो. (१२ मांथी १०) (A) Do Sandhi (10 out of 12) (B) Dissolve Sandhi (10 out of 12)	०५ ०५ 05 05 १० 10
5	1 to 4	टूंक प्रश्नो (८मांथी ५) Short questions (5 out of 8)	१० 10

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
B.A.SEMESTER – 1

COURSE –MI101
CREDIT- 04

SANSKRIT
RAGUVANSHAM SARG - 2

MARKS : 50+50=100

UNIT 1	महाकाव्यस्य उद्भवः, विकासः, लक्षणानि, कविपरिचयः, जीवनं-कृतय-समयः, रघुवंशस्य आधारस्थानानि, महाकाव्य-मूल्यांकनम्
UNIT 2	रघुवंश सर्ग - २ कृति - अभ्यासः श्लोक 1 to 40
UNIT 3	कृति - अभ्यासः श्लोक 41 to 75
UNIT 4	अनुष्टुप्, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, वसंततिलका, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम्, द्रुतविलम्बितम्, उपजाति, मालिनी, पृथिवी

आधार ग्रंथोः रघुवंश- सर्ग -२ प्रा. सुरेश ज. द्वे- सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाढ
रघुवंश- सर्ग-२ डॉ. शान्तिकुमार पंड्या, डॉ. जगदीश जोशी, पार्वप्रकाशन, अमदावाढ
संस्कृत साहित्यनो परियय- अ.डी. शास्त्री, पार्वप्रकाशन, अमदावाढ
संस्कृत साहित्यनो ँतिहास- सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाढ
संस्कृत साहित्यनो ँतिहास- प्रो. जितेन्द्र देसाई, पार्वप्रकाशन, अमदावाढ
प्रशिष्ट संस्कृत ँढ - डो. मनसुभ मोलिया, पार्व प्रकाशन, अमदावाढ
संस्कृत ँढ संरचना - डो. वसंतकुमार भट्टे, सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाढ.

प्रश्नपत्रनुं माणभुं

परीक्षा समय : २:३० कलाक

Exam Time : 2.30 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणभार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1	निबंधात्मक प्रश्न अथवा निबंधात्मक प्रश्न Descriptive question or Descriptive question	१० 10
2	2	(अ)अनुवाद (४मांथी २) (ब)संदर्भ समजूति (५मांथी ३) (A) Translation of Verse (2 out of 4) (B) Reference to the context (3 out of 6)	०४ ०५ 04 06 10
3	2, 3	विवेचनात्मक नोड : (४ मांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
4	4	छंद-लक्षण बंधारण सडित समजवो. (४ मांथी २) Explanation of Chhanda with formation Illustration.(2 out of 4)	१० 10
5	1 to 4	टुंका प्रश्नो (८मांथी ५) Short questions (5 out of 8)	१० 10

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
B.A. SEMESTER – 1

COURSE – MD101
CREDIT- 04

SANSKRIT
NITISATAKAM - BHARTRUHARI

MARKS : 50+50=100

UNIT 1	भर्तृहरिः- जीवनम्, समयः, कृतयः च, मुक्तकसाहित्यम्- इतिहासः, लक्षणानि - नीतिशतकस्य मूल्यांकनम्
UNIT 2	नियत-श्लोकाः (20) श्लोक क्रमः 03,04,05,06,07,09,10,11,13,15,16,18,20,21,23,23,28,30,31,34
UNIT 3	नियत श्लोकाः (20) श्लोक क्रमः 35,36,37,39,40,41,42,43,44,45,46,47,48,49,51,58,59,63,64,65
UNIT 4	नियत श्लोकाः (20) श्लोक क्रमः 66,68,69,70,71,72,75,77,78,80,81,86,88,90,91,92,93,94,96,98

आधार ग्रंथोः नीतिशतकम् - सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद्
नीतिशतकम् - पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद्
नीतिशतक - प्रवीण पुस्तक भंडार, राजकोट
संदर्भ ग्रंथो संस्कृत साहित्यनो परियय- अ.डी.शास्त्री-पार्श्वप्रकाशन, अमदावाद्
संस्कृत साहित्यनो इतिहास-सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद्

UNIT-2

श्लोक क्रमांक

३.	प्रसह्य मणिमुद्धरेत्	मूर्धजन उपहास	मूर्खजन उपहासः
४.	लभेत सिकतासु	मूर्धजन उपहास	मूर्खजन उपहासः
५.	शशी दिवसधूसरो	प्रकृतिक्रम अने मनुष्य रुचि	प्रकृतिक्रम एवं मनुष्यरुचिः
६.	मणिः शाणोल्लीढ	प्रकृतिक्रम अने मनुष्य रुचि	प्रकृतिक्रम एवं मनुष्यरुचिः
७.	परिक्षीणः कश्चित्	समयनी भलवत्तरता	समयस्य बलवत्ता
८.	विपदि धैर्यम्	महात्मा लक्षण	महात्मनः लक्षणम्
१०.	निन्दन्तु नीति	धीरपुरुष लक्षण	धीरपुरुष लक्षणम्
११.	हर्तुर्याति न गोचरम्	विद्याप्रशंसा	विद्याप्रशंसा
१३.	क्षुत्क्षामोऽपि	सत्त्ववान प्रशंसा	सत्त्ववतः प्रशंसा
१५.	मनसि वचसि	सज्जन लक्षण	सज्जनलक्षणम्
१६.	इतः स्वपिति	महापुरुष लक्षण	महापुरुष लक्षणम्
१८.	क्वचिद्भूमौ शय्या	सत्त्ववान प्रकृतिलक्षण	सत्त्ववतः प्रकृतिलक्षणम्
२०.	नमस्यामो देवान्	कर्मनी महत्ता	कर्मणः महत्ता
२१.	दौर्मन्त्र्यान्	व्यावहारिक उदापण	व्यवहारचातुर्यम्
२२.	जाड्यं द्वीमति	गुणद्वेषी वर्णन	गुणद्वेषी वर्णनम्
२३.	जातिर्यातु रसातलम्	दोषीपुरुष लक्षण	कृपणपुरुष लक्षण
२८.	सम्पत्सु महताम्	महापुरुष लक्षण	महापुरुष लक्षणम्
३०.	दुर्जनः परिहर्तव्यो	व्यावहारिक सनीति	व्यावहारनीतिः
३१.	क्षीरेणात्मगतोदकाय	मैत्रीसौन्दर्य स्वभाव	मैत्रीसौन्दर्यस्वभावः
३४.	स्वल्पस्नायुवसा	सद्भागी-निर्भागीनी प्रकृति	सद्भागी-निर्भागी-प्रकृतिः

UNIT-3

३५.	पापान् निवारयति	मित्रलक्षणम्	मित्रलक्षणम्
३६.	मृगमीनसज्जनानाम्	सहजशत्रुः	सहजशत्रुः
३७.	सन्तप्तायसि	संगतिनुं इण	सङ्गतेः फलम्
३८.	कुसुमस्तबकस्येव	सत्ववाननी प्रकृति	सत्त्ववतः प्रकृतिः
४०.	मौनान्मूकः	सेवाधर्मनी दुष्करता	सेवाधर्मस्य दुष्करता
४१.	नम्रत्वेनोन्नमन्तः	सत्पुरुष चरित्र	सत्पुरुषचरित्रम्
४२.	लोभश्चेदगुणेन	निःशेष निर्णय-शुवननुं सत्य	निःशेषनिर्णय-जीवनस्यसत्यम्
४३.	अम्भोजिनीवन	सत्ववाननी प्रकृति	सत्त्ववतः प्रकृतिः
४४.	खल्वाटो	निर्भागीनुं लक्षण	निर्भाणः लक्षणमृगिनः
४५.	नैवाकृतिः	कर्मनी भडता	कर्मणः महत्ता
४६.	ऐश्वर्यस्य विभूषणम्	सच्यरित्र-शुवननो सार	सच्चरित्रं जीवनस्य सारः
४७.	एते सत्पुरुषाः	उत्तम, मध्यम, अधम पुरुषना लक्षणो	उत्तम, मध्यम, अधम पुरुषाणां लक्षणानि
४८.	जाड्यं धियो	संगतिनुं इण	सङ्गतेः फलम्
४९.	वाञ्छा सज्जनसङ्गमे	उत्तमपुरुषना गुणनुं वर्णन	उत्तमपुरुषस्य गुणवर्णनम्
५१.	तृष्णां छिन्धि	सदाचरश्च उपदेश	सदाचार-उपदेशः
५८.	वरं पक्षच्छेदः	व्यावहारिक उपदेश	व्यावहारिक उपदेशः
५९.	नेता यत्र बृहस्पतिः	दैवनी प्रलभता	दैवस्य प्रलम्बता
६३.	दानं भोगो	धननी गति	धनस्य गतिः
६४.	यस्यास्ति वित्तम्	धननुं भडत्व	धनस्य महत्त्वम्
६५.	रत्नैर्महाहैस्तुतुषुः	धीरत्व वर्णन	धीरत्ववर्णनम्

UNIT-4

६६.	सन्त्यन्येऽपि	दुर्जन लक्षण	दुर्जनलक्षणम्
६८.	जयन्ति ते	कवि प्रशंसा	कवेः प्रशंसा
६९.	यद्वात्रा निजभाल	भाग्यनी भलवत्तरता	भाग्यस्य बलवत्तरता
७०.	लाङ्गूलचालन	धीर-अधीर लक्षण	धीर-अधीर लक्षणम्
७१.	राजन् ! दुधुक्षसि	राज्यकारभार विषयक	राज्यसञ्चालनविषयः
७२.	सत्यानृता	राजनीति स्वरूप	राजनीतिस्वरूपम्
७५.	अकरुणत्वमकारण	दुरात्मानी प्रकृति	दुरात्मनः प्रकृतिः
७७.	आरम्भगुर्वी	दुर्जन सज्जन मैत्री स्वरूप	दुर्जन-सज्जनमैत्री स्वरूप
७८.	प्रदानं प्रच्छन्नम्	सज्जन लक्षण	सज्जनलक्षणम्
८०.	भवन्ति नम्रास्तरवः	परोपकारीनुं लक्षण	परोपकारस्य लक्षम्
८१.	पद्याकरं दिनकरो	परोपकारीनुं लक्षण	परोपकारस्य लक्षम्
८६.	यदचेतनोऽपि	तेजस्वी पुरुष लक्षण	तेजस्विपुरुष लक्षणम्
८८.	आज्ञा कीर्तिः	राजसेवानुं इण	राजसेवायाः फलम्
९०.	उद्भासिताखिलखलस्य	दुर्जन लक्षण	दुर्जनलक्षणम्
९१.	विद्या नाम नरस्य	विद्यानुं भडत्व	विद्यायाः महत्त्वम्
९२.	दाक्षिण्यं स्वजने	व्यावहारिक उपदेश	व्यावहारिक उपदेशः
९३.	करे श्लाघ्यस्त्यागः	व्यावहारिक उपदेश	व्यावहारिक उपदेशः
९४.	वहति भुवनश्रेणीम्	महापुरुषोनुं चरित्र	महापुरुषाणां चरित्रम्
९६.	परिवर्तिनि संसारे	व्यावहारिक उपदेश	व्यावहारिक उपदेशः
९८.	सिंहः शिशुरपि	सत्ववाननी प्रकृति	सत्त्ववानस्य प्रकृतिः

પ્રશ્નપત્રનું માળખું

પરીક્ષા સમય : ૨:૩૦ કલાક

Exam Time : 2.30 Hrs.

પ્રશ્ન ક્રમ	યુનિટ ક્રમ	પ્રશ્ન પ્રકાર	ગુણભાર
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1	નિબંધાત્મક પ્રશ્ન અથવા નિબંધાત્મક પ્રશ્ન Descriptive question or Descriptive question	૧૦ 10
2	2,4	(અ)અનુવાદ (૪માંથી ૨) (બ)સંદર્ભ સમજૂતિ (૬માંથી ૩) (A) Translation of Verse (2 out of 4) (B) Reference to the context (3 out of 6)	૦૪ ૦૬ 04 06 10
3	2, 3	વિવેચનાત્મક નોંધ : (૪ માંથી ૨) Critical Notes (2 out of 4)	૧૦ 10
4	3, 4	વિવેચનાત્મક નોંધ : (૪ માંથી ૨) Critical Notes (2 out of 4)	૧૦ 10
5	1 to 4	ટૂંકા પ્રશ્નો (૮માંથી ૫) Short questions (5 out of 8)	૧૦ 10

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
ARTS / COMMERCE / SCIENCE SEMESTER – 1

COURSE –AEC101
CREDIT- 02

SANSKRIT
MALVIKAGNIMITRAM A STUDY : KALIDAS

MARKS : 25+25=50

UNIT 1	कवि-जीवनं-कवनं-समयः रूपकस्य-उद्भव-विकासः-प्रकारः आधारस्थान-परिवर्तन नाटकस्य लक्षणं च मालविकाग्निमित्रं - मूल्यांकनम्
UNIT 2	अंङ्क - 1,2,3,4,5 नोधः अनुवाद, संदर्भ अपेक्षित नथी

संदर्भ ग्रंथोः मालविकाअग्निमित्रं – डॉ. शान्तिकुमार पंड्या वगेरे, पार्श्वप्रकाशन, अमदावाद
मालविकाअग्निमित्रं – प्रा. पी.सी.दवे, प्रा. सुरेश ज. दवे, सरस्वती पुस्तक भंडार, अमदावाद

प्रश्नपत्रं माण्डुं

परीक्षा समय : २:०० क्वाक

Exam Time : 2:00 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणभार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1,2	निबंधात्मक प्रश्न अथवा निबंधात्मक प्रश्न Descriptive question or Descriptive question	१० 10
2	1,2	विवेचनात्मक नोधः (४ भांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
3	1,2	टूँका प्रश्नो (८भांथी ५) Short questions (5 out of 8)	०५ 05

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
ARTS / COMMERCE / SCIENCE SEMESTER – 1

COURSE –SEC 101
CREDIT- 02

SANSKRIT
YOGA PART—1(Niyatansh)

MARKS : 15+10+25=50
(Theory +Practical+Internal)

UNIT 1	<p>Introduction To Yoga, Etymology Definitions Of Yoga According To Text. Aim And Objectives Of Yoga., Misconceptions About Yoga. Study Of Patanjali Yoga Sutras.(Pad : 1.2 To 14,Pad 1.30 & 1.33) Concept Of Chitta, Chitta Vritti, Abhyasa And Vairagya, Chitta Vikshepas, Chitta Bhumis & Chitta Prasadam. Prayer, Concept And Recitation Of Pranava (Mantra Om) Concept And Recitation Of Selected Prayers. 1. Shanti Mantra (Om Sahana Vavatu 2. Mahrshi Patanjali Prayer. 3. Yog Day Prayer (Sangachadvam...) 4. Om Sarve Bhavantu Sukhinah....</p>
UNIT 2	<p>Sukshma Vyayama From Sitting Position. Padanguli Naman,Goolf Naman,Goolf Chakra,Janu Naman,Janu Falak Akarshan, Ardha Titli,Shroni Chakra Poorna Titli. Mushtika Bandana, Manibandha Naman, Manibandha Chakra,Khehuni Naman,Skandha Chakra,Greeva Sanchalana. Sukshma Vyayama From Standing Position. Neck Movement, Shoulder Movement Griva Shakti Vikasaka (1,2,3,4) Bhuja Balli Shakti Vikasaka. Purna Bhuja Shakti Vikasaka. Trunk Movement, Knee Movement Kati Shakti Vikasaka (1,2,3,4,&5) Jangha Shakti Vikasaka., Janu Shakti Vikasaka. Ankle Movement, Pada Mula Shakti Vikasaka.</p>

संदर्भ ग्रंथोः पतंजली योगसूत्र
योगविद्या – पू. भाषादेवञ्च – प्रविश प्रकाशन, राजकोट
योगासन – डॉ. पी.डी.शर्मा – नवनीत पब्लिकेशन, अमदावाद
कोमन योग प्रोटोकॉल – गुजरात राज्य योग बोर्ड, गांधीनगर

प्रश्नपत्रनुं माणभुं

परीक्षा समय : १:०० कलाक

Exam Time : 1.00 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणभार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1,2	विवेचनात्मक नोट : (४ भांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
2	1,2	टूंक प्रश्नो (१२ भांथी १०) Short questions (10 out of 12)	०५ 05

क्रम	युनिट क्रम	परीक्षानो प्रकार	गुण
1	1,2	युनिवर्सिटी प्रेडिक्टकल परीक्षा	१०

KSKV KACHCHH UNIVERSITY - BHUJ
DEPARTMENT OF SANSKRIT
CHOICE BASED CREDIT SYSTEM
SEMESTER SYSTEM – 2023-24
ARTS / COMMERCE / SCIENCE SEMESTER – 1

COURSE – VAC 101
CREDIT- 02

SANSKRIT
ENVIRONMENTAL SCIENCE & SANSKRIT

MARKS : 25+25=50

UNIT 1	महाभारत नियत श्लोक
UNIT 2	रामायण - स्कन्दपुराण- श्रीमद्भागवत पुराण, अध्याय, 23 नियत श्लोक

સંદર્ભ ગ્રંથો: સંસ્કૃત વાઙ્ગમય મેં પર્યાવરણ - ડો શંકરલાલ શાસ્ત્રી, હંસા પ્રકાશન, જયપુર
વૃક્ષ માહાત્મ્ય - ડૉ દુર્ગા જોષી નવદુર્ગા પ્રકાશન, અમરેલી
મહાભારત શાંતિપર્વ અધ્યાય-૧૭૭ ભાંડારકર ગુજરાતી આવૃત્તિ- પ્રવીણ પ્રકાશન , રાજકોટ
વાલ્મીકિ રામાયણ - ગીતાપ્રેસ ગોરખપુર

महाभारत नियत श्लोक

ધર્મસ્યાર્થસ્ય કામસ્ય ફલમાહુર્મનીષિણ: । તડાગં સુકૃતં દેશે ક્ષેત્રમેવ મહાશ્રયમ્ ॥
વિદ્વાન મનીષીઓએ તળાવ નિર્માણને ધર્મ, અર્થ અને કામ એ ત્રિવિધ ફળ આપનારું કહ્યું છે, તળાવ તો જે તે પ્રદેશમાં પુષ્પદાયી છે, પુષ્પ ક્ષેત્ર છે અને મહાન આશ્રયરૂપ છે.

ચતુર્વિધાનાં ભૂતાનાં તડાગમુપલક્ષયેત્ । તડાગાનિ ચ સર્વાણિ દિશન્તિ શ્રિયમુત્તમામ્ ॥
તડાવને ચારેય પ્રકારના પ્રાણીઓ માટે ઉપયોગી સમજવું જોઈએ. સર્વે તળાવો ઉત્તમ સંપત્તિ આપનારાં છે.

દેવા મનુષ્યા ગન્ધર્વા: પિતરોરગરાક્ષસા: । સ્થાવરાણિ ચ ભૂતાનિ સંશ્રયન્તિ જલાશયમ્ ॥
દેવો, મનુષ્યો, ગંધર્વો, પિતૃઓ, સર્પો, રાક્ષસો અને સ્થાવર ભૂતો (પર્વત, વૃક્ષ વગેરે) એ સહુ જલાશયોનો આશ્રય લે છે.

અતીતાનાગતે ચૌભે પિતૃવંશં ચ ભારત । તારયેદવૃક્ષરોષી ચ તસ્માદવૃક્ષાન્પ્રરોપયેત્ ॥
હે ભારત ! વૃક્ષારોપણ કરનારો પુરુષ પોતાના પૂર્વજો અને ભવિષ્યના સંતાનો-એ બંને પ્રકારના પિતૃવંશને તારે છે. તેથી વૃક્ષો વાવો.

તસ્ય પુત્ર ભવન્ત્યેતે પાદપા નાત્ર સંશય: । પરલોકગત: સ્વર્ગ લોકાંશ્ચાપ્નોતિ સૌંડવ્યયાન્ ॥
જેને કોઈ પુત્ર નથી તેના આ તેણે વાવેલાં વૃક્ષો જ પુત્રો છે, એમાં કોઈ સંશય નથી. વૃક્ષ વાવનાર (મૃત્યુ પછી) પરલોકમાં જઈ સ્વર્ગમાં અક્ષય (ફળદાયી) લોકોને મેળવે છે.

પુષ્પૈ: સુરગણાન્વૃક્ષા: ફલૈશ્ચાપિ તથા પિતૃન્ । છાયયા ચાતિર્થીસ્તાત પૂજયન્તિ મહીરુહા: ॥
હે તાત ! ધરતી પર ઉગેલા વૃક્ષો પોતાના પુષ્પોથી દેવગણોનું, ફળોથી પિતૃઓનું અને છાયા વડે અતિથિઓનું પૂજન કરે છે.

કિંનરોરગરાક્ષાંસિ દેવગન્ધર્વમાનવા: । તથા ઋષિગણાશ્ચૈવ સંશ્રયન્તિ મહીરુહા: ॥
કિન્નરો, સર્પો, રાક્ષસો, દેવો, ગંધર્વો, માનવો અને ઋષિ ગણો એ સહુ વૃક્ષોનો આશ્રય લે છે.

पुष्पिताः फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान् । वृक्षदं पुत्रवद्वृक्षास्तारयन्ति परत्र च ॥

આ જગતમાં ફૂલ અને ફળથી લચી પડતાં વૃક્ષો માનવોને જે વૃક્ષોનું દાન કરે છે (એટલે કે લોક હિતાર્થે વૃક્ષ વાવે છે) તેને તે વૃક્ષો પરલોકમાં પુત્રની જેમ તારી દે છે.

તસ્માત્કાગે વૃક્ષા વૈ રોપ્યાઃ શ્રેયોર્થિના સદા । પુત્રવત્પરિપાલ્યાશ્ચ પુત્રાસ્તે ધર્મતઃ સ્મૃતઃ ॥

તેથી કલ્યાણની કામના કરનારે હંમેશાં તળાવ તટે વૃક્ષો વાવવાં. વળી એ વૃક્ષોનું પુત્રોની જેમ જતન કરવું. કેમ કે ધર્મતઃ વૃક્ષોને પુત્રો જ માનવામાં આવ્યા છે. -અનુશાસન પર્વ, મહાભારત

વનં રાજા ધૃતરાષ્ટ્રઃ સપુત્રો વ્યાઘ્રા વને સંજય પાણ્ડવેયાઃ। મા વનં છિન્ધિ સવ્યાઘ્રં મા વ્યાઘ્રાન્નીનશો વનાત્ ॥

હે સંજય, પુત્રો સહિત રાજા ધૃતરાષ્ટ્ર એક વન છે અને પાંડવો એ વામાં નિવાસ કરવાવાળા વાઘ છે. આથી વાઘ સાથે આ વનને ન કાપો અને તેમાંના વાઘોનો નાશ ન કરો.

નિર્વનો વધ્યતે વ્યાઘ્રો નિર્વ્યાઘ્રં છિદ્યતે વનમ્ । તસ્માદવ્યાઘ્રો વનં રક્ષેદવનં વ્યાઘ્રં ચ પાલયેત્ ॥

વનથી બહાર નીકળેલો સિંહ મૃત્યુ પામે છે અને સિંહ વિના વનને બધા લોકો આસાનીથી કાપી નાખે છે. માટે સિંહ વનની રક્ષા કરે અને વન સિંહનું પાલનપોષણ કરે. (મહા. ઉદ્યોગપર્વ)

તત્ર વૃક્ષા મધુફલા નિત્યપુષ્પફલોપગાઃ । પુષ્પાણિ સુગન્ધાનિ રસવન્તિ ફલાનિ ચ ॥

તે સ્થાનના વૃક્ષો પર હંમેશાં ઘણા મીઠા ફળ અને ફૂલો ઊગે છે. પુષ્પો સુગંધિત અને ફળો રસદાર હોય છે.

સર્વકામફલાસ્તત્ર કેચિન્વૃક્ષા જનાધિપ । અપરે ક્ષીરિણો નામ વૃક્ષાસ્તત્ર નરાધિપ ॥

યે ક્ષરન્તિ સદા ક્ષીરં ષડ્ઘસં ચાઽમૃતોપમમ્ । વસ્ત્રાણિ ચ પ્રસૂયન્તે ફલેષ્વાભરણાનિ ચ ॥

આ સ્થાનના અમુક વૃક્ષો તો ઈચ્છાનુસાર ફળ આપે છે. બીજા ક્ષીરી નામના અનેક વૃક્ષો છે જેમાંથી સદા અમૃત સમાન દૂધ અને રસો ઝર્યા કરે છે. આ જ વૃક્ષોમાંથી વસ્ત્રો અને તેમના ફળોમાંથી ઘરેણાં પ્રાપ્ત થાય છે. (મહા. ભીષ્મપર્વ)

વયં વનચરા ગોપાઃ સદા ગોધનજીવિનઃ। ગાવોઽસ્મદેવતં વિદધિ ગિરયશ્ચ વનાનિ ચ ॥

આપણે વનમાં રહેવાવાળા ગોપાલ છીએ અને ગોધનથી પોતાની આજીવિકા ચલાવીએ છીએ. આથી આપને ખબર હોવી જોઈએ કે ગાયો, વન અને પર્વત, આ જ આપણા દેવ છે. (મહા. ખિલપર્વ)

ઘનાનામપિ વૃક્ષાણામાકાશોઽસ્તિ ન સંશયઃ । તેષાં પુષ્પફલે વ્યક્તિનિત્યં સમુપલભ્યતે ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૦

વૃક્ષો ઘનીભૂત છે છતાં તેમનામાં આકાશ તો છે જ તે વાતમાં કોઈ શંકા નથી, કેમકે સદાય તેમનામાં ફળ તથા ફૂલ આવ્યાં જ કરે છે !

ઊષ્મતો ગ્લાનપર્ણાનાં ત્વક્ફલં પુષ્પમેવ ચ । મ્લાયતે ચૈવ શીતેન સ્પર્શસ્તેનાત્ર વિદ્યતે ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૧

ગરમીથી તેમનાં પાંદડાં, છાલ, ફળ તથા ફૂલ કરમાય છે. ઠંડીથી પણ પ્લાન થાય છે, તેથી (એમને વિષે) સ્પર્શ (સિદ્ધ થાય) છે.

વાય્વગ્ન્યશનિનિષ્પૈષૈઃ ફલપુષ્પં વિશીર્યતે । શ્રોત્રેણ ગૃહ્યતે શબ્દસ્તસ્માચ્છૃણ્વન્તિ પાદપાઃ ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૨

વાયુ, અગ્નિ, વીજળી તથા (મેઘના) કડાકાથી ફળ તથા ફૂલ નાશ પામે છે. (વૃક્ષો) શ્રવણેન્દ્રિયથી શબ્દનું ગ્રહણ કરે છે, તેથી તેઓ સાંભળે (પણ) છે.

વલ્લી વેષ્ટયતે વૃક્ષં સર્વતશ્ચૈવ ગચ્છતિ । ન હ્યદષ્ટેશ્ચ માર્ગોઽસ્તિ તસ્માત્પશ્યન્તિ પાદપાઃ ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૩

વેલ વૃક્ષને વીંટળાય છે અને ચારેબાજુ ફેલાય છે. જોયા વગર માર્ગ સૂઝે (જ) નહિ, તેથી વૃક્ષો જુએ (પણ) છે.

પુણ્યાપુણ્યૈસ્તથા ગન્ધૈર્ધૂપૈશ્ચ વિવિધૈરપિ । અરોગાઃ પુષ્પિતાઃ સન્તિ તસ્માજ્જિઘ્નન્તિ પાદપાઃ ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૪

પવિત્ર તથા અપવિત્ર ગંધ તથા અનેકવિધ ધૂપોની ગંધથી વૃક્ષો રોગરહિત થઈ પુષ્પિત તથા ફલિત થાય છે, તેથી ફૂલો સૂંઘે (પણ) છે.

પાદૈઃ સલિલપાનં ચ વ્યાધીનામપિ દર્શનમ્ । વ્યાધિપ્રતિક્રિયત્વાચ્ચ વિદ્યતે રસનં દ્રુમે ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૫

મૂળથી વૃક્ષો (પાણી) પીએ છે, વૃક્ષોમાં રોગ પણ દેખાય છે તથા રોગનો ઉપચાર પણ (ઔષધિ સિંચવાથી) થાય છે, તેથી વૃક્ષોમાં જીભ (રસનેન્દ્રિય) પણ હોય છે.

વક્ત્રેગોત્પલનાલેન યથોર્ધ્વં જલમાદદેત્ । તથા પવનસંયુક્તઃ પાદૈઃ પિબતિ પાદપઃ ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૬

કમળની દાંડી (ભૂંગળી) રૂપ મુખથી જેમ જળ ઉપર ખેંચી શકાય, તે રીતે પવનની સહાયથી વૃક્ષ મૂળિયાંથી (જળ) પીએ છે.

ग्रहणात्सुखदुःखस्य छिन्नस्य च विरोहणात् । जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते ॥ १२-१७७-१७
सुખ તથા દુઃખનો અનુભવ કરવાથી તથા કાપેલા (વૃક્ષ)ના ફરી ઊગવાથી વૃક્ષોમાં હું જીવ જોઉં છું. તેમનામાં અચૈતન્ય (જડતા) નથી.

તેન તજ્જલમાદતં જરયત્યગ્નિમારુતૌ । આહારપરિણામાચ્ચ સ્નેહો વૃદ્ધિશ્ચ જાયતે ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૮
તે (વૃક્ષ) વડે (જે) તે જળ સ્વીકારાયું (તેને) અગ્નિ (તાપ) અને પવન પચાવે છે. આહાર (પાણી, ખાતર)ના પરિણામ (પાચન)થી (વૃક્ષોમાં) સ્નિગ્ધતા અને વૃદ્ધિ જન્મે છે.

જઙ્ગમાનાં ચ સર્વેષાં શરીરે પચ્ચ ધાતવઃ । પ્રત્યેકશઃ પ્રભિદ્યન્તે ચૈઃ શરીરં વિચેષ્ટતે ॥ ૧૨-૧૭૭-૧૯
બધાં જંગમ (પ્રાણીઓ)ના શરીરમાં પાંચ ધાતુઓ (રહેલી) છે, પણ તે જુદા-જુદા પ્રકારે રહેલી છે, જેથી (તેમનું) શરીર ચેષ્ટા કરે છે. મહાભારત શાંતિપર્વ અધ્યાય-૧૭૭ ભાંડારકર ગુજરાતી આવૃત્તિ

રામાયણ નિયત શોલ્ક

ગૃહાસમીરણો ગન્ધાન્ નાનાપુષ્પભવાન્ બહૂન્ । ઘ્રાણતર્પણમભ્યેત્ય કં નરં ન પ્રહર્ષયેત્ ॥ 2-94-14
વિવિધ પ્રકારના પુષ્પોની પ્રચુર સુગંધ લઈને ગુફાઓમાંથી નીકળેલી હવા નાકને પરિતૃપ્ત કરતી કયા પુરુષ પાસે આવીને તેનો આનંદ નથી વધારી રહી?

इमां हि रम्यां गजयूथलोडितां निपीततोषां गजसिंहवानरैः ।
સુપુષ્પિતાં પુષ્પભરૈરલંકૃતાં ન સોઽસ્તિ યઃ સ્યાન્ન ગતક્લમઃ સુખી ॥ 2-95-18

હાથીઓના જેને સમૂહ મથી નાખે છે તથા સિંહ અને વાંદરા જેનું પાણી પીએ છે, જેના કિનારે સુંદર ફૂલોથી લદાયેલા વૃક્ષો શોભા પામે છે અને પુષ્પસમૂહોથી જે અલંકૃત છે, તેવી આ રમણીય મંદાકિની નદીમાં સ્નાન કરીને જે ઝાનિરહિત તથા સુખી ન થાય-એવો મનુષ્ય આ જગતમાં નથી.

शैलप्रस्थेषु रम्येषु पश्येमान् कामहर्षणान् । किंनरान् दवन्दवशो भद्रे रममाणान् मनस्विनः ॥ 2-94-11
આ સુંદર પર્વત શિખરો પરના એ પ્રદેશોને જો, જે પ્રેમમિલનની ઈચ્છામાં વૃદ્ધિ કરીને આંતરિક હર્ષને વધારનારા છે. ત્યાં કિન્નર યુગલો આમતેમ ફરી રહ્યા છે.

नानामृगगणैर्द्वीपितरक्षकृष्णगणैर्वृतः । अदुष्टैर्भात्ययं शैलो बहुपक्षिसमाकुलः ॥ 2-94-7
આ પર્વત અસંખ્ય પક્ષીઓથી વ્યાપ્ત છે અને વિવિધ પ્રકારના હરણો, મોટામોટા વાઘો (સિંહો), ચિતાઓ તથા રીંછોથી ભરેલો છે. તે સિંહ આદિ હિંસક જીવો પોતાની દુષ્ટતા છોડીને અહીં રહે છે અને આ પર્વતની શોભા વધારે છે. વાયુ પ્રદૂષણ - વિનાશ

तद् यामस्तत्र यत्रास्ते मारुक्प्रदोरुतो ही नः । मा विनाशं गमिष्याम अप्रसादयादितेः सुताः ॥ 7-35-63
અદિતિપુત્રો, હવે આપણે એ સ્થાન પર જવું જોઈએ, જ્યાં આપણને બધાને પીડા આપનારા વાયુદેવતા છુપાઈને બેઠા છે. ક્યાંક એવું ન થઈ જાય કે એમને પ્રસન્ન કર્યા વિના આપના સર્વનો નાશ થઈ જાય.

निःस्वाध्यायवषट्कारं निष्क्रियं धर्मवर्जितम् । वायुप्रकोपात् त्रैलोक्यं निरयस्थमिवाभवत् ॥ 7-35-52
ત્રણે લોકમાં ન તો ક્યાંય વેદાધ્યયન થતું હતું કે ન યજ્ઞ. બધી ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ અટકી ગઈ. વાયુપ્રકોપના કારણે ત્રિભુવનનાં પ્રાણીઓ એવું કષ્ટ ભોગવવા લાગ્યા કે જાણે નરકમાં પડી ગયા હોય.

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥ 1.2.15
હે નિષાદ, તને અનંતકાળ સુધી (પ્રતિષ્ઠા) શાંતિ મળશે ન મળે, કારણ કે તે પ્રેમકીડામાં લીન એવા બે ક્રૌંચ પક્ષીઓમાંથી એકની હત્યા કરી દીધી.

आश्रमं चिरसम्बद्धं यद्विनाशितवानसि । दुराचारोऽसि तन्मूढ तस्मात्त्वं न भविष्यसि ॥ 1.55.27
તે લાંબા સમયથી વિકસાવેલા તથા હર્યાભર્યા કરેલા આશ્રમનો નાશ કર્યો-ઉજાડી નાખ્યો. તું દુરાચારી અને વિવેકહીન છો, અને આ પાપના કારણે તું કુશળ નહિ રહી શકે.

वसिष्ठो भरतश्चैनं पप्रच्छतुरनामयम् । शरीरेऽग्निषु वृक्षेषु शिष्येषु मृगपक्षिषु ॥ 2.90.8
વશિષ્ઠ અને ભરતે મહર્ષિના શરીર, અગ્નિહોત્ર, શિષ્યવર્ગ, વૃક્ષ-ફૂલો, મૃગ-પક્ષી વગેરેના કુશળપ્રશ્ન પૂછ્યા.

ते वक्षानुदकं भूमिमाश्रमेषूटजांस्तथा । न हिंस्युरिति तेनाऽहमेक एव समागतः ॥ 2.91.9
તેઓ આશ્રમના વૃક્ષો, પાણી, ભૂમિ, અને પર્ણશાળાઓને હાનિ ન પહોંચાડે એટલા માટે હું એકલો જ અહીં આવ્યો છું.

विषये ते महाराज महाव्यसनकर्षिताः । अपि वृक्षाः परिम्लानास्सपुष्पाङ्कुरकोरकाः ॥

2.59.4

हे महाराज, तमारा राज्यमा वृक्षो પણ आ महान संकटथी कृशकाय थर्ग गया छे, पुष्पो अंकुर अने कर्णो सहित मुरअर्ग गया छे.

अकर्दममिदं तीर्थं भरद्वाज निशामय । रमणीयं प्रसन्नाम्बु सन्मनुष्यमनो यथा ॥

1.2.5

हे भरद्वाज, जुओ, अर्हीनो घाट भूष ज सुंदर छे. अर्ही कएवजुं कोर्ग निशान नथी. अर्हीनुं जण अेजुं ज स्वच्छ छे, जेजुं सत्पुरुषोनुं मन होय छे.

मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णु शाखा शंकरमेव च । पत्रे पत्रे सर्वदेवायाम् वृक्ष राजो नमोस्तुते ॥

जेना भूणमां ब्रह्मा, त्वचामां विष्णु, शाखां शंकर तथा पांएडे-पांएडे सर्व देवोनु वास छे अेवां वृक्षोना राजा, हे पीपला । तने नमस्कार.

स्कन्दपुराण

अश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम् न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चणीकान् ।

कपित्थबिल्वा मलकत्रयञ्च पञ्चा ममुप्त्वा नरकन्न पश्येत् ॥

अेक पीपलो, अेक कडवो लीमडो, अेक वड, दश भाटी आमली, कपित्थ (कोठानुं वृक्ष), बीली तथा आमणानां त्रण तथा पांय आम्र; जे कोर्ग आ वृक्षोनुं रोपण करी तेमनी देभलाण करशे तेने नर्कनां दर्शन नहि करवा पडे.

श्रीमद्भागवत पुराण, अध्याय, 23

पश्यतैतान् महाभागान् परार्थकान्तजीवितान् । वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः ॥३२॥

अर्थातः- मारा प्रिय मित्रो! जोवो आ वृक्ष केटला भाज्यवान छे. तेमनो ज्वन बीजानी ललाए करवा माटे ज छे. ते पोते तो पवननां वेगने, वर्षाने, तापने, ठंडीने सहन करे छे, પણ आपणी तेनाथी रक्षा करे छे.

अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम् । सुजनस्येव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिनः ॥३३॥

अर्थातः- हुं कहुं छुं के आमनो ज ज्वन श्रेष्ठ छे. कारण के अेमना द्वारा बधा प्राणीओने आसरो भणे छे, ज्वन-निर्वाह थाय छे. जेम कोर्ग सज्जन व्यक्तित्नां गृहेथी कोर्ग भाली हाथे जतुं नथी, तेम आ वृक्षो पासेथी बधाने यथेच्छ मणी ज जाय छे.

पत्रपुष्पफलच्छयामूलवल्कलदारुभिः । गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते ॥३४॥

अर्थातः- आ वृक्ष पान, इल, इण, छाया, मूणियां, छाल, लाकडी, गुंए, गंध, राभ, कोलसा, अंकुर अने कूपणीथी लोकोनी कामना पूर्ण करे छे.

एतावज्जन्मसाफल्यं देहिनामिह देहिषु । प्राणैरर्थर्धिया वाचा श्रेय एवाचरेत् सदा ॥३५॥

अर्थातः- मारा प्रिय मित्रो! संसारमां तो प्राणीओ घषाबधा छे પણ तेमना ज्वननी सङ्गता अेटलामां ज छे के ज्यां सुधी थर्ग शके त्यां सुधी पोताना धनथी, विवक विचारथी, वाणीथी अने प्राणीथी પણ अेवा ज कर्मा करवा जेथी बीजानुं लजुं थाय.

प्रश्नपत्रनुं माणपुं

परीक्षा समय : २:०० कलाक

Exam Time : 2:00 Hrs.

प्रश्न क्रम	युनिट क्रम	प्रश्न प्रकार	गुणभार
No.	Unit No.	Type of Question	Weightage
1	1	विवेचनात्मक नोध : (४ भांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
2	2	विवेचनात्मक नोध : (४ भांथी २) Critical Notes (2 out of 4)	१० 10
3	1,2	टुंका प्रश्नो (८ भांथी ५) Short questions (5 out of 8)	०५ 05